Research Article

शोध ज्ञानान्तिका (Shodh Gyanantika)
वर्ष 14 अंक 2 अप्रैल 2026: 181–185

ISSN 2277-582X
DOI: 10.66302/sg.vol.14.issue.02.30
Website: www.shodhgyanantika.com

भारत और दक्षिण एशिया : वर्तमान क्षेत्रीय गतिशीलताएँ और रणनीतिक चुनौतियों का प्रबंधन

हेती सिंह

जूनियर रिसर्च फेलो, राजनीति विज्ञान विभाग, रामेश्वरी देवी राजकीय कन्या महाविद्यालय, भरतपुर (राज.)

***Corresponding Author Email**-hetisingh2001@gmail.com

Received : March 2026
Revised : April 2026
Accepted : April 2026
Published : April 2026

HOW TO CITE THIS ARTICLE:

सिंह, हे. (2026). भारत और दक्षिण एशिया: वर्तमान क्षेत्रीय गतिशीलताएँ और रणनीतिक चुनौतियों का प्रबंधन. शोध ज्ञानान्तिका, 14(2), 181-185.

कॉपीराइट © 2026 लेखक(गण)। इसे D.A.V. (P.G.) कॉलेज, आर्य समाज रोड, मुज़फ़्फ़रनगर (U.P.)-250101 के राजनीति विज्ञान विभाग द्वारा प्रकाशित किया गया है। यह एक ओपन एक्सेस लेख है जिसे क्रिएटिव कॉमन्स एट्रिब्यूशन 4.0 इंटरनेशनल लाइसेंस (CC BY 4.0) (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/) की शर्तों के तहत वितरित किया गया है। यह लाइसेंस किसी भी माध्यम में बिना किसी रोक-टोक के इस्तेमाल, वितरण और पुनरुत्पादन की अनुमति देता है, बशर्ते मूल काम का उचित संदर्भ दिया जाए।

सारांश

यह शोध पत्र दक्षिण एशिया के संदर्भ में भारत की उभरती हुई भूमिका का विश्लेषण करता है, जो वर्तमान क्षेत्रीय गतिशीलताओं और उभरती रणनीतिक चुनौतियों से सम्बधित है। शीतयुद्धोत्तर काल में भारत ने अपनी विदेश नीति को वैश्विक और क्षेत्रीय परिस्थितियों के अनुसार पुनः संयोजित किया है और स्वयं को अंतर्राष्ट्रीय प्रणाली में एक महत्वपूर्ण संतुलन कारक के रूप में स्थापित किया है। आर्थिक और भू–राजनीतिक प्रभाव में वृद्धि के बावजूद, भारत को अपने पड़ोसी देशों के साथ संबंधों को प्रबंध करने में कई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। दक्षिण एशिया क्षेत्र राजनीतिक परिवर्तन, आर्थिक आपसी निर्भरता, सुरक्षा चिन्ताओं और विशेषकर चीन के बढ़ते हस्तक्षेप से परिभाषित है। यह शोध पत्र पड़ोसी पहले की नीति का आलोचनात्मक विश्लेषण करता है, जिसमें इसके उद्देश्यों, उपलब्धियों और सीमाओं पर विशेष ध्यान दिया गया है। यह पड़ोसी देशों के बीच अविश्वास के स्रोतों, जैसे पहलों के माध्यम से चीन के बेल्ट एण्ड रोड इनिशिएटिव के कारण बढ़ते प्रभाव के रणनीतिक निहितार्थों, और सार्क (SAARC) तथा बिम्सटेक (BIMSTEC) जैसे क्षेत्रीय संगठनों की भूमिका का भी विश्लेषण करता है। द्वितीयक स्रोतों पर आधारित विश्लेषणात्मक और वर्णनात्मक पद्धति का उपयोग करते हुए यह शोध यह तर्क प्रस्तुत करता है कि भारत को क्षेत्रीय कूटनीति में अधिक समावेशी, सहयोगी और एक लचीले दृष्टिकोण अपनाना चाहिए। इस अध्ययन का मुख्य लक्ष्य सम्पर्क को सुदृढ़ करना, आर्थिक एकीकरण को बढ़ावा देना और विश्वास निर्माण उपायों को मजबूत करना, दक्षिण एशिया में स्थायी शांति और स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक है।

मुख्य शब्द – पड़ोस प्रथम की नीति, क्षेत्रीय गतिशीलता, रणनीतिक चुनौतियाँ, चीन का प्रभाव, भू–राजनीति, क्षेत्रीय सहयोग, हिंद प्रशांत क्षेत्र

परिचय

21वीं सदी के विकसित होते परिदृश्य में, विशेषकर शीतयुद्धोत्तर काल में, भारत एक महत्वपूर्ण क्षेत्रीय और वैश्विक खिलाड़ी के रूप में उभरा है, जो बदलती हुई भू–राजनीतिक और आर्थिक परिस्थितियों के अनुसार अपनी विदेश नीति को पुनः परिभाषित कर रहा है। जब अंतर्राष्ट्रीय प्रणाली बहुध्रुवीय हो रही है, भारत ने एक व्यावहारिक और बहुआयामी कूटनीतिक दृष्टिकोण अपनाया है, जिसमें वह विशाल वैश्विक शक्तियों के साथ संतुलन बनाते हुए अपने क्षेत्रीय संबंधों को मजबूत कर रहा है। भारत की रणनीतिक पहुँच एक्ट ईस्ट नीति (Act East Policy) जैसे पहलों के माध्यम से दक्षिण–पूर्वी एशिया के साथ संबंधों को गहरा कर रही है, तथा जी–20, ब्रिक्स, एससीओ और बिम्सटेक जैसे वैश्विक संस्थाओं के साथ सहयोग को बढ़ा रही है।

साथ ही, भारत ने संयुक्त राज्य अमेरिका और रूस जैसे प्रमुख शक्तियों के साथ अपने संबंधों में संतुलित दृष्टिकोण बनाए रखते हुए रणनीतिक स्वतंत्रता के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को दर्शाया है।

इस वैश्विक परिदृश्य के भीतर, दक्षिण एशिया भारत की विदेश नीति का केन्द्रीय हिस्सा बना रहा है। अपनी भौगोलिक स्थिति, ऐतिहासिक संबंधों और सांस्कृतिक निकटता के कारण भारत इस क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यह पाकिस्तान, चीन, नेपाल, भूटान, बांग्लादेश, श्रीलंका और मालदीव जैसे कई पड़ोसी देशों के साथ स्थलीय और समुद्री सीमाएं साझा करता है। यह निकटता भारत को एक प्राकृतिक नेतृत्व की भूमिका प्रदान करती है, लेकिन साथ ही उसे जटिल क्षेत्रीय चुनौतियों का सामना भी करना पड़ता है। दक्षिण एशिया विभिन्न राजनीतिक प्रणालियों, ऐतिहासिक संघर्षों, सीमा विवादों, जातीय जटिलताओं और आर्थिक विकास के विभिन्न स्तरों से युक्त है। ये सभी तत्व एक कमजोर क्षेत्रीय व्यवस्था का निर्माण करते हैं, जहाँ राज्यों के बीच संबंधों पर घरेलू राजनीतिक परिवर्तन और बाहरी हस्तक्षेप दोनों का प्रभाव पड़ता है। इस संदर्भ में, भारत ने अपने पड़ोसी देशों के साथ अपने संबंधों को शांतिपूर्ण सहअस्तित्व, गुटनिरपेक्षता और पारस्परिक सहयोग जैसे सिद्धान्तों के आधार पर आगे बढ़ाया है। (Acharya, A., 2014)

2014 के बाद से, भारत ने पड़ोस पहले की नीति को सक्रिय रूप से अपनाया है, जो क्षेत्रीय सम्पर्क, आर्थिक एकीकरण, विकास सहयोग और मानवीय सहायता पर बल देती है। यह नीति क्षेत्र में विश्वास और सहयोग को बढ़ावा देने के साथ–साथ एक जिम्मेदार क्षेत्रीय शक्ति के रूप में भारत की भूमिका को मजबूत करने का प्रयास करती है। तथापि, इस नीति की प्रभावशीलता को कई कारकों द्वारा चुनौती दी गई है, जिसमें पाकिस्तान के साथ लगातार तनाव, चीन के साथ अनिर्णीत सीमा विवाद, पड़ोसी देशों में राजनीतिक अस्थिरता और बेल्ट एण्ड रोड इनिशिएटिव (Belt and Road Initiative) जैसे पहलों के माध्यम से चीन की बढ़ती रणनीतिक उपस्थिति शामिल है। इसके अतिरिक्त, नेपाल, श्रीलंका, बांग्लादेश और मालदीव जैसे देशों में घरेलू राजनीतिक परिवर्तनों ने यह दर्शाया है कि आंतरिक गतिशीलताएं द्विपक्षीय संबंधों को गहराई से प्रभावित करती हैं। छोटे देशों द्वारा भारत और चीन के बीच संतुलन बनाने की प्रवृत्ति भी क्षेत्रीय भू–राजनीति को और अधिक जटिल बना रही है। इस परिदृष्य में, यह आवश्यक हो जाता है कि भारत के पड़ोसी देशों के साथ संबंधों की प्रकृति का आलोचनात्मक परीक्षण किया जाए। यह अध्ययन सहयोग और संघर्ष के उभरते हुए रूपों का विश्लेषण करने, भारत की पड़ोस नीति की प्रभावशीलता का आकलन करने और दक्षिण एशिया में क्षेत्रीय स्थिरता और एकीकरण पर इसके व्यापक प्रभावों को समझने का प्रयास करता है। (Baruah, D. M., 2020)

साहित्य समीक्षा

भारत के पड़ोसी देशों के साथ संबंधों का अध्ययन विशेषकर दक्षिण एशिया की भू–राजनीति, क्षेत्रीय सुरक्षा और विदेश नीति विश्लेषण के विस्तृत संदर्भ में विद्वानों का ध्यान आकर्षित कर रहा है। उपलब्ध साहित्य सुरक्षा गतिशीलता, आर्थिक आपसी निर्भरता, रणनीतिक प्रतियोगिता और क्षेत्रीय सहयोग जैसे कई आयामों का विश्लेषण करता है।

Barry Buzan और Ole Wæver (2003) ने अपनी Regional Security Complex Theory (RSCT) के माध्यम से दक्षिण एशिया को एक अंतःसंबंध सुरक्षा क्षेत्र के रूप में परिभाषित किया है, जहाँ राज्यों की सुरक्षा चिन्ताएं एक–दूसरे से गहरी तरह जुड़ी हुई हैं। उनका विश्लेषण यह दर्षाता है कि भारत–पाकिस्तान प्रतिद्वंद्विता क्षेत्रीय सुरक्षा संरचना को आकार देने में केन्द्रीय भूमिका निभा रही है। (Brewster, D., 2018)

Stephen P. Cohen (2004) ने भारत–पाकिस्तान संबंधों को ''स्थायी प्रतिद्वंद्विता'' के रूप में वर्णित किया है, जो ऐतिहासिक अविश्वास, क्षेत्रीय विवाद, विशेषकर कश्मीर मुद्दे और बार–बार होने वाले सैन्य संघर्षों में नहीं निहित है। यह दृष्टिकोण दक्षिण एशिया में क्षेत्रीय सहयोग के सामने स्थिर बाधाओं को उजागर करता है। (Cohen, S. P., (2004)

भारतीय विदेश नीति के संदर्भ में, सी राजा मोहन (2015) यह तर्क देते हैं कि भारत ने एक आदर्शवादी दृष्टिकोण से हटकर अधिक यथार्थवादी और व्यावहारिक रणनीति अपनाई है, जो बदलती हुई वैश्विक और क्षेत्रीय परिस्थितियों के अनुरूप रणनीतिक स्वावलम्बता और शक्ति संतुलन पर जोर देती है। इसी प्रकार, एसण्डी. मुनि (2016) नेपाल और श्रीलंका के साथ भारत के संबंधों का विश्लेषण करते हुए यह दर्शाते हैं कि छोटे पड़ोसी देशों में राजनीतिक अस्थिरता और बाहरी हस्तक्षेप भारत की सुरक्षा और क्षेत्रीय प्रभाव के लिए महत्वपूर्ण चुनौतियां पैदा करते हैं।

आई. के. गुजराल (1998) द्वारा प्रस्तुत गुजराल थ्योरी में भारत की पड़ोस नीति का एक महत्वपूर्ण मानक ढाँचा है, जो छोटे पड़ोसी देशों के प्रति अप्रवृत्ति आधारित रियायतों की वकालत करता है ताकि विश्वास निर्माण और क्षेत्रीय सहयोग को बढ़ावा दिया जा सके। यह सिद्धांत भारत की बाद की पहलों, विशेषकर (Neighbourhood First Policy) का आधार माना जाता है।

दक्षिण एशिया में चीन के बढ़ते प्रभाव का विस्तृत विश्लेषण David Brewster (2018) जैसे विद्वानों द्वारा किया गया है, जो String of Pearls, Belt and Road Initiative (BRI) जैसे रणनीतिक पहलों का अध्ययन करते है। चीन पाकिस्तान आर्थिक गालियारा (China-Pakistan Economic Corridor) श्रीलंका और मालदीव में बुनियादी ढांचे के निवेश जैसे पहलों को क्षेत्रीय शक्ति संतुलन को बदलने और भारत के लिए रणनीतिक चुनौतियां पैदा करने वाले तत्व के रूप में देखा जाता है। (Dash, K. C., 2008)

उदारवादी संस्थावादी दृष्टिकोण से, Amitav Acharya (2014) और अन्य विद्वान सार्क और बिम्सटेक जैसे क्षेत्रीय संगठनों की भूमिका पर जोर देते हैं, जो आर्थिक सहयोग और क्षेत्रीय एकीकरण को बढ़ावा देते हैं। हालांकि, भारत–पाकिस्तान तनाव के कारण सार्क की सीमित प्रभावशीलता ने क्षेत्रीय प्रगति को बाधित किया है।

रचनावादी दृष्टिकोण भारत के नेपाल, भूटान और बांग्लादेश जैसे देशों के साथ संबंधों को आकार देने में सामान्य सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और सामाजिक संबंधों के महत्व को रेखांकित करता है। इस संदर्भ में,

नरम कूटनीति, जिसमें सांस्कृतिक आदान – प्रदान और विकास सहयोग शामिल हैं, भारत की क्षेत्रीय रणनीति का एक महत्वपूर्ण घटक माना जाता है। (Ganguly, S., 2016)

शोध अंतराल

भारत के पड़ोसी देशों के साथ द्विपक्षीय संबंधों पर विस्तृत साहित्य उपलब्ध होने के बावजूद, वर्तमान क्षेत्रीय गतिशीलताओं के संदर्भ में भारत की पड़ोस प्रथम नीति का एक समावेशी और समसामयिक विश्लेषण अभी भी सीमित है। विशेषकर, चीन के बढ़ते रणनीतिक प्रभाव, पड़ोसी देशों में बदलते घरेलू राजनीतिक परिदृश्य और क्षेत्रीय संस्थाओं की बदलती भूमिका के संयुक्त प्रभाव पर अभी तक पर्याप्त ध्यान नहीं दिया गया है। यह अध्ययन इस कमी को पूरा करने का प्रयास करता है, जिसमें दक्षिण एशिया में भारत की भूमिका का एक बहुआयामी और अद्यतन विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

शोध उद्देश्य

वर्तमान अध्ययन का उद्देष्य दक्षिण एशिया में बदलती हुई क्षेत्रीय गतिशीलताओं और रणनीतिक चुनौतियों के संदर्भ में भारत के पड़ोसी देशों के साथ संबंधों का विश्लेषण करना है। इस अध्ययन के विशिष्ट उद्देश्य निम्नलिखित हैंः दक्षिण एशिया में भारत के पड़ोसी देशों के साथ संबंधों की गतिशील प्रकृति का विश्लेषण करना

- भारत की विदेश नीति के प्रमुख आयामों, विशेषकर पड़ोस नीति का अध्ययन करना
- चीन और पाकिस्तान के साथ भारत के संबंधों में रणनीतिक चुनौतियों का मूल्यांकन करना
- बांग्लादेश, नेपाल, श्रीलंका, भूटान और मालदीव के साथ भारत के संबंधों में उभरती प्रवृत्तियों का अध्ययन करना
- वर्तमान परिदृश्य में भारत की पड़ोस नीति का प्रभाव, अवसरों और सीमाओं का आकलन करना

शोध प्रश्न – इस अध्ययन को निम्नलिखित शोध प्रश्नों द्वारा निर्देषित किया गया है :

- भारत के पड़ोसी देशों के साथ संबंधों के प्रमुख रणनीतिक और राजनीतिक आयाम क्या हैं?
- दक्षिण एशिया में चीन का बढ़ता प्रभाव भारत के क्षेत्रीय हितों के लिए किस प्रकार चुनौती पैदा करता है?
- पड़ोस नीति क्षेत्रीय सहयोग को मजबूत करने में किस हद तक सफल रही है?
- सार्क और बिम्सटेक जैसे क्षेत्रीय संगठन भारत की क्षेत्रीय संलिप्ता को किस प्रकार प्रभावित करते हैं?

शोधप्रविधि

इस अध्ययन में विश्लेषणात्मक और वर्णनात्मक शोध अभिकल्प को अपनाया गया है, जो भारत के पड़ोसी देशों के साथ संबंधों का गुणात्मक विश्लेषण करने पर केन्द्रित है। यह शोध मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है, जिसमें सरकारी रिपोर्ट, नीति दस्तावेज, शैक्षिक पत्रिकाएं, पुस्तकें और विश्वसनीय समाचार स्रोत शामिल हैं। विदेश मंत्रालय के आधिकारिक प्रकाषन और अंतर्राष्ट्रीय संबंधों और दक्षिण एशिया की भू–राजनीति पर आधारित विद्वतापूर्ण साहित्य का व्यापक रूप से उपयोग किया गया है। इस अध्ययन में यथार्थवाद, उदरवाद और संरचनावाद जैसे अंतर्राष्ट्रीय संबंध सिद्धान्तों का उपयोग करते हुए क्षेत्रीय गतिशीलता और रणनीतिक व्यवहार का विश्लेषण किया गया है।

भारत की पड़ोस नीति : एक अवधारणा

भारत की पड़ोस नीति समय के साथ विकसित होती रही है, जिसमें निरन्तरता और परिवर्तन दोनों देखे जा सकते हैं। 1990 के दशक में Gujral Doctrine ने छोटे पड़ोसी देशों के प्रति अप्रवृत्ति रियायतों पर बल देते हुए

विश्वास निर्माण और क्षेत्रीय सहयोग को बढ़ावा दिया, जिससे भारत की वर्तमान क्षेत्रीय संलिप्ता की नीति को आधार मिला। (Garver, J. W., 2011)

2014 के बाद से पड़ोस पहले की नीति भारत की विदेश नीति का केन्द्रीय स्तम्भ बन गया है। यह क्षेत्रीय सम्पर्क, आर्थिक सहयोग, विकास साझेदारी और मानवीय सहायता पर बल देता है। तथापि, इसके क्रियान्वयन में कई संरचनात्मक और भू–राजनीतिक चुनौतियाँ रही हैं। (Gujral, I. K., 1998)

विश्लेषण

भारत–पाकिस्तान संबंध

भारत और पाकिस्तान के संबंध ऐतिहासिक संघर्षों, कश्मीर विवाद और सीमा पार आतंकवाद के कारण पूरी तरह से प्रभावित हैं। चीन के साथ पाकिस्तान के बढ़ते रणनीतिक और आर्थिक संबंध, विशेषकर चीन पाकिस्तान आर्थिक गलियारा (CPEC) ने क्षेत्रीय सुरक्षा परिदृश्य को और अधिक जटिल बना दिया है। पाकिस्तान के चीन के साथ बढ़ते रणनीतिक और आर्थिक संबंध ने क्षेत्रीय सुरक्षा परिदृष्य को और अधिक जटिल बना दिया है। यह संबंध भारत के लिए रणनीतिक चिन्ता का विषय है क्योंकि यह क्षेत्र में शक्ति संतुलन को प्रभावित करता है। साथ ही, सीमा पार आतंकवाद और सुरक्षा खतरे दोनों देशों के संबंधों में प्रमुख बाधा बने हुए हैं। समय–समय पर कूटनीतिक प्रयासों के बावजूद, दोनों देशों के संबंध अभी भी तनाव और विरोध से परिभाषित हैं, जिससे क्षेत्रीय सहयोग और स्थिरता प्रभावित होती है। (Haidar, S., 2021)

भारत–बांग्लादेश संबंध

यह संबंध क्षेत्रीय सहयोग का एक सफल उदाहरण है, जहाँ 2015 का भूमि सीमा समझौता (Land Boundary Agreement) एक महत्वपूर्ण उपलब्धि रहा है। तथापि, तीस्ता जल विवाद और व्यापार असमानता जैसे मुद्दे अभी भी प्रभाव डालते हैं। भारत और बांग्लादेश के संबंध दक्षिण एशिया में क्षेत्रीय सहयोग का एक सबसे सफल उदाहरण माने जाते हैं। दोनों देशों के बीच ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और भौगोलिक निकटता ने इस संबंध को मजबूत बनाया है। इस समझौते ने

दोनों देशों के बीच विश्वास को बढ़ाया और द्विपक्षीय संबंधों को नई दिशा दी। दोनों देशों के बीच सम्पर्क, व्यापार, ऊर्जा और परिवहन के क्षेत्र में सहयोग में भी उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। इसके बावजूद, भारत और बांग्लादेश के संबंध सामान्यतः सकारात्मक और सहयोगात्मक रहे हैं, जो दक्षिण एशिया में क्षेत्रीय एकीकरण और स्थिरता के लिए महत्वपूर्ण हैं। शेख हसीना के तख्तापलट के बाद 2026 के प्रारंभ में बनी तारिक रहमान की नई सरकार के प्रति भारतीय विदेश नीति का रुख सकारात्मक है। (Malone, D. M., 2011)

भारत–नेपाल संबंध

सांस्कृतिक और एतिहासिक निकटता के बावजूद, राजनीतिक परिवर्तन और सीमा विवाद, विशेषकर कालापानी मुद्दा, तनाव का कारण बने हैं। नेपाल का चीन की ओर झुकाव भारत के लिए नए चुनौती पैदा करता है। भारत और नेपाल के संबंध गहरी सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और भौगोलिक निकटता पर आधारित हैं। दोनों देशों के बीच खुली सीमा, साझा धार्मिक और सांस्कृतिक परम्पराएं और जन–से–जन संबंध इस संबंध को विशेष बनाते हैं। तथापि, समय–समय पर राजनीतिक परिवर्तन, संवैधानिक मुद्दे और सीमा विवादों के कारण दोनों देशों के संबंधों में तनाव देखा गया है। विशेषकर कालापानी क्षेत्र से जुड़ा विवाद भारत–नेपाल संबंधों में एक महत्वपूर्ण मुद्दा रहा है। नेपाल का बढ़ता हुआ चीन के साथ संबंध भी एक संतुलन रणनीति के रूप में देखा जा रहा है, जो भारत के लिए क्षेत्रीय प्रभाव के संदर्भ में नई चुनौती पैदा करता है। इसके बावजूद, दोनों देशों के बीच आर्थिक सहयोग, विकास साझेदारी और सम्पर्क को मजबूत करने के प्रयास जारी हैं, जिससे यह संबंध दक्षिण एशिया में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। (Mohan, C. R., 2015)

भारत–श्रीलंका संबंध

श्रीलंका भारतीय महासागर में रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण है। हालांकि, हम्बनटोटा बंदरगााह में चीन के निवेश ने रणनीतिक चिन्ताएं बढ़ाई हैं। भारत और श्रीलंका के संबंध दक्षिण एशिया में रणनीतिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि श्रीलंका भारतीय महासागर के केन्द्र में स्थित है। दोनों देशों के बीच ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और आर्थिक संबंध लम्बे समय से रहे हैं। हाल के वर्षों में भारत ने श्रीलंका के साथ आर्थिक और सुरक्षा सहयोग को मजबूत किया है, विशेषकर 2022 के आर्थिक संकट के दौरान भारत द्वारा प्रदान की गई सहायता ने भारत की एक विश्वसनीय साझेदार के रूप में छवि को मजबूत किया है। इस प्रकार, भारत और श्रीलंका के संबंध सहयोग और रणनीतिक प्रतियोगिता दोनों के मिश्रण से प्रभावित होते हैं, जो दक्षिण एशिया में क्षेत्रीय राजनीति को गहराई से प्रभावित करते हैं। (Muni, S. D., 2016)

भारत–मालदीव संबंध

मालदीव के साथ संबंध सागरीय सुरक्षा और हिंद प्रशान्त राजनीति से जुड़े हैं, जहाँ चीन की उपस्थिति से प्रतियोगिता बढ़ी है। भारत और मालदीव के संबंध सागरीय सुरक्षा और हिंद क्षेत्र में भू–राजनीति के संदर्भ में बढ़ती महत्वाकांक्षा रखते हैं। मालदीव भारतीय महासागर में एक रणनीतिक स्थान रखता है, जिसके कारण यह भारत की क्षेत्रीय सुरक्षा नीति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है । भारत ने मालदीव को आर्थिक सहायता, विकास साझेदारी और मानवीय सहायता के माध्यम से मजबूत सहयोग प्रदान किया है। विशेषकर आपदा और संकट के समय भारत ने शीघ्र सहायता प्रदान करते हुए अपनी विश्वसनीयता को साबित किया है। तथापि, मालदीव में चीन की बढ़ती उपस्थिति ने क्षेत्रीय रणनीतिक प्रतियोगिता को तेजी से बढ़ा दिया है। इसके अतिरिक्त, इंडिया आउट जैसे अभियानों ने यह दर्शाया है कि घरेलू राजनीति भी विदेश नीति को गहराई से प्रभावित करती है। इस प्रकार, भारत और मालदीव के संबंध सागरीय सुरक्षा, आर्थिक सहयोग और रणनीतिक प्रतियोगिता के बीच संतुलन बनाए रखने का एक महत्वपूर्ण उदाहरण हैं। (Pant, H. V., 2019)

भारत–भूटान संबंध

यह संबंध दक्षिण एशिया में सबसे स्थिर और सहयोगात्मक हैं, जहाँ जल विद्युत सहयोग और पारस्परिक विश्वास प्रमुख हैं। भारत और भूटान के संबंध दक्षिण एशिया में सबसे अधिक स्थिर और सहयोगात्मक संबंधों में से एक हैं। दोनों देशों के बीच गहरा विश्वास, पारस्परिक समझ और मैत्री इस संबंध की मुख्य विशेषताएं हैं। भारत भूटान के आर्थिक विकास में एक प्रमुख सहयोगी के रूप में उभरा है और विभिन्न क्षेत्रों में सहायता प्रदान करता रहा है। 2017 का डोकलाम संकट दोनों देशों के बीच रणनीतिक सहयोग और समन्वय का एक महत्वपूर्ण उदाहरण रहा है, जिसमें भारत ने भूटान के हितों की रक्षा के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस प्रकार, भारत और भूटान के संबंध पारस्परिक विश्वास, सहयोग और रणनीतिक समझ के आधार पर टिके हुए हैं, जो दक्षिण एशिया में एक आदर्ष द्विपक्षीय संबंध का उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। (Scott, D., 2019)

प्रमुख क्षेत्रीय गतिशीलताएं

- **भू–रणनीतिक प्रतियोगिता** : दक्षिण एशिया इंडो–पेसिफिक राजनीति का एक महत्वपूर्ण केन्द्र बन गया है, जहाँ भारत और चीन के बीच प्रतियोगिता लगातार बढ़ रही है।
- **शक्ति असमानता** : क्षेत्र में भारत की प्रभुत्वपूर्ण स्थिति एक ओर सहयोग के अवसर प्रदान करती है, तो दूसरी ओर छोटे देशों में चिन्ताएं भी उत्पन्न करती है।
- **घरेलू राजनीतिक प्रभाव** : पड़ोसी देशों में राजनीतिक परिवर्तन और अंतरिक राजनीति, द्विपक्षीय संबंधों को सीधे रूप से प्रभावित करती है।
- **आर्थिक सम्पर्क और एकीकरण** : BBIN और BIMSTEC जैसे पहल क्षेत्रीय एकीकरण और व्यापार को बढ़ावा दे रही हैं।
- **सागरीय महत्व** : भारतीय महासागर क्षेत्र वैश्विक व्यापार और सुरक्षा के दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण बन गया है ।

प्रमुख चुनौतियाँ

दक्षिण एशिया में भारत के पड़ोसी देशों के साथ संबंधों को कई जटिल और आपसी रूप से जुड़ी हुई चुनौतियां प्रभावित करती हैं, जो क्षेत्रीय सहयोग और स्थिरता में बाधा डालती हैं।

- **चीन का बढ़ता प्रभाव** : बेल्ट एण्ड रोड इनिशिएटिव (BRI) और चीन पाकिस्तान आर्थिक गलियारा (China-Pakistan Economic Corridor) (CPEC) जैसे पहलों के माध्यम से चीन ने पाकिस्तान, श्रीलंका, नेपाल और मालदीव जैसे देशों में अपनी आर्थिक और रणनीतिक उपस्थिति बढ़ाई है। इस से क्षेत्रीय शक्ति संतुलन में परिवर्तन आया है और भारत के लिए रणनीतिक चिन्ताएं उत्पन्न हुई हैं।
- **सीमा विवाद** : चीन के साथ (LAC, पाकिस्तान के साथ LOC और नेपाल के साथ कालापानी जैसे क्षेत्रों में विवाद अभी भी तनाव और अविश्वास को बढ़ाते हैं। ये मुद्दे क्षेत्रीय स्थिरता में बड़ी बाधा हैं।
- **आतंकवाद और सुरक्षा चुनौतियाँ** : विशेषकर पाकिस्तान से उत्पन्न सीमा पार आतंकवाद, तथा अन्य समस्याएं जैसे तस्करी, अपराध और उग्रवाद, क्षेत्रीय सुरक्षा वातावरण को जटिल बनाती हैं।
- **जल विवाद और पर्यावरण चुनौतियाँ** : तीस्ता जल विवाद और सिन्धु जल समझौते जैसे मुद्दे संसाधन प्रबंधन की महत्वपूर्णता को दर्शाते हैं। साथ ही, जलवायु परिवर्तन और प्राकृतिक आपदाएं भी क्षेत्र के लिए दीर्घकालीन खतरा हैं।
- **राजनीतिक अस्थिरता** : श्रीलंका, नेपाल, बांग्लादेश और मालदीव जैसे देशों में राजनीतिक परिवर्तन, आर्थिक संकट और अंतरिक तनाव, द्विपक्षीय संबंधों को प्रभावित करते हैं।
- **व्यापार असमानता और आर्थिक प्रतियोगिता** : भारत के साथ व्यापार में असमानता के कारण कुछ छोटे देश अन्य विकल्पों, विशेषकर चीन की ओर मुख करते हैं।

निष्कर्ष

दक्षिण एशिया में चीन का बढ़ता प्रभाव, सीमा विवाद, आतंकवाद, जल विवाद, पर्यावरण चुनौतियाँ, और राजनीतिक अस्थिरता भारत के लिए प्रमुख चुनौतियां हैं। व्यापार असमानता और आर्थिक प्रतियोगिता भी संबंधों को प्रभावित करती है। भारत के पड़ोसी देशों के साथ संबंध सहयोग, प्रतियोगिता और रणनीतिक संतुलन का एक जटिल मिश्रण हैं। भारत ने पड़ोसी प्रथम की नीति के माध्यम से क्षेत्रीय भूमिका को मजबूत करने के लिए महत्वपूर्ण प्रयास किए हैं, लेकिन दक्षिण एशिया का परिदृश्य अभी भी गतिशील और चुनौतीपूर्ण बना हुआ है। चीन का बढ़ता प्रभाव, लगातार सुरक्षा चिन्ताएं और पड़ोसी देशों में राजनीतिक परिवर्तन भारत की क्षेत्रीय रणनीति को प्रभावित करते रहे हैं। ये तत्व यह दर्शाते हैं कि परम्परागत दृष्टिकोण अब पर्याप्त नहीं है और एक अधिक लचीली, समावेशी और अनुकूल नीति की आवश्यकता है। भारत को अपने पड़ोसी देशों के साथ संबंधों में प्रभुत्व के स्थान पर विश्वास, साझेदारी और सहयोग पर आधारित दृष्टिकोण अपनाना होगा। इस सम्पर्क को मजबूत करना, आर्थिक एकीकरण को बढ़ावा देना, संघर्षों का संवाद के माध्यम से समाधान और क्षेत्रीय संस्थाओं की भूमिका को मजबूत करना अत्यावश्यक है। इस प्रकार, दक्षिण एशिया का भविष्य केवल भारत के नेतृत्व पर ही निर्भर नहीं करता, बल्कि इस बात पर भी निर्भर करता है कि वह अपने पड़ोसी देशों के साथ संतुलित, सहयोगात्मक और विश्वास आधारित संबंध स्थापित कर पाता है। एक व्यावहारिक, लचीली और विश्वास आधारित दृष्टिकोण ही भारत को उभरती हुई रणनीतिक चुनौतियों का सामना करने और दक्षिण एशिया में सतत विकास सुनिश्चित करने में सहायक होगा।

सन्दर्भ सूची

Acharya, A. (2014)- The End of American World Order- Polity Press

Baruah, D. M. (2020)- India's Maritime Strategy and the Indo-Pacific- Carnegie Endowment for International Peace

Brewster, D. (2018)- India and China at Sea: Competition for Naval Dominance in the Indian Ocean- Oxford University Press

Cohen, S. P. (2004)- The Idea of Pakistan- Brookings Institution Press

Dash, K. C. (2008)- Regionalism in South Asia: Negotiating Cooperation, Institutional Structures- Routledge

Ganguly, S. (2016)- Deadly Impasse: India and Pakistan at the Dawn of a New Century- Cambridge University Press

Garver, J. W. (2011)- Protracted Contest: Sino-Indian Rivalry in the Twentieth Century- University of Washington Press

Gujral, I. K. (1998)- A Foreign Policy for India- Ministry of External Affairs

Haidar, S. (2021)- Indian Diplomacy in the Neighbourhood- Oxford University Press

Malone, D. M. (2011)- Does the Elephant Dance? Contemporary Indian Foreign Policy- Oxford University Press

Ministry of External Affairs, Government of India (2024–2026)- Annual Report- Government of India

Mohan, C. R. (2015)- Modi's World: Expanding India's Sphere of Influence- HarperCollins

Muni, S. D. (2016)- Foreign Policy of India: Challenges and Perspectives- Cambridge University Press

Pant, H. V. (2019)- Indian Foreign Policy: An Overview- Manchester University Press

Scott, D. (2019)- India's Indo-Pacific Strategy: Regional Dynamics- International Affairs, 95(1), 45–62

Tellis, A. J. (2016)- India as a Leading Power- Carnegie Endowment for International Peace